P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-I* ISSUE- VIII* November- 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

विश्व में आतंकवाद का बढ़ता दायरा

सारांश

आतंकवाद वर्तमान समय में भयंकर विश्वव्यापी समस्या बन गया है। यह समस्या न केवल भारत में ही अपनी पकड़ मजबूत किये हुए है बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी यह समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। आतंकवाद भारत की प्रमुख सबसे बड़ी समस्या है, जिसने भारतीय शासन व्यवस्था को जर्जर कर दिया है। आतंकवाद ने भारत की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों को प्रभावित किया है। अतः इसे दूर करना अत्यधिक आवश्यक है।

मुख्य शब्द : भयंकर, विश्वव्यापी, अन्तर्राष्ट्रीय, जर्जर, सांस्कृतिक, परिस्थितियों।

मीनाक्षी शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
गोकुल दास गर्ल्स डिग्री कॉलेज,
मुरादाबाद

प्रस्तावना

भय एवं चिंता की स्थिति। इसका उद्देश्य है हिंसा द्वारा जनता में आतंक फैलाकर अपनी शक्ति प्रदर्शित करना। भारत में ही नहीं अपितु आज विश्व स्तर पर आतंकवाद की समस्या प्रमुख है। भारत में यह भयंकर रूप धारण किये हुये है। आतंकवादी अपने तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति हेतु निरीह लोगों की हत्यायें कर रहें हैं। भारतीय लोकतन्त्र को कमजोर बना रहा हैं। पंजाब, जम्मू–कश्मीर, असम, तमिलनाडु, बिहार, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश आदि राज्यों में आतंकवाद की समस्या है।

आतंकवाद जैसा कि इसके नाम से ही विदित होता है, आतंक से सम्बन्धित विचारधारा है। व्यक्तियों में आतंक पैदा करना है ताकि वे आसानी से अपने नापाक इरादों की पूर्ति कर सकें। आतंकवाद प्रतिशोध की भावना से शुरू होता है। ऐसे प्रतिशोध आन्दोलनों में अक्सर आर्थिक हितों की वजह से बाहरी हस्तक्षेप और मदद जुड़ जाती है। और यही वजह बनती है प्रतिशोध को आतंकवाद के स्तर तक व्यापक बनाने की।

आतंकवाद एक ऐसी विचारधारा है, जो राजनीतिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बल या अस्त्र–शस्त्र में विश्वास रखती है। अस्त्र–शस्त्रों का ऐसा घृणित प्रयोग प्रायः विरोधी वर्ग, दल, समुदाय या संप्रदाय को भयभीत करने और उस पर विजय प्राप्त करने की दृष्टि से किया जाता है। अपने राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए आतंकवादी गैर–कानूनी ढंग से या हिंसा से सरकार को गिराने तथा शासनतंत्र पर अपना अधिकार करने का प्रयास भी करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

आतंक का मुख्य उद्देश्य है सर्वसाधारण में डर और आतंक फैलाना, ताकि कोई व्यक्ति आतंकवादियों के विरूद्ध गवाही न दे सके और वे निर्भीक भाव से अपनी घृणित गतिविधियाँ जारी रख सकें, अंततः आतंकवादी अनेक प्रकार से आतंक फैलाने का प्रयास करते हैं– राजनीतिज्ञों की हत्या, राजदूतों का अपहरण, निर्दोष लोगों को बंदी बनाकर सरकार के सामने अपनी अनुचित माँगें रखना, हवाई जहाजों का अपहरण, भीड़ भरे स्थानों पर बम विस्फोट, रेलवे लाइनों की फिश प्लेंटे हटना, ताकि बड़ी रेल दुर्घटनाएँ हो सकें, कुएँ आदि के पानी में विष का मिश्रण, बैंक डकैतियाँ आदि अनेक कार्य हैं, जो आतंकवादी गतिविधियों में सम्मिलित हैं।

उद्देश्य की दृष्टि से आतंकवादी गतिविधियों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है

1. धनात्मक।
2. ऋणात्मक।

धनात्मक आतंकवाद

धनात्मक आतंकवाद वह है,जिसके उद्देश्य विदेशी सत्ता से अपने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए की जाने वाली आतंकवादी गतिविधियाँ इसी प्रकार की हैं। उत्तर आयरलैंड, फिलिस्तीन, दक्षिण अफ्रीका आदि के आतंकवादी इसी श्रेणी में रखे जा सकते हैं। किंतु हम अच्छे उद्देश्य के लिए भी आतंकवादी उपायों को अपनाने का अनुमोदन नहीं करते। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था

कि अच्छे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अच्छे ही साधन अपनाए जाने चाहिए। शांतिमय और अहिंसक साधन ही स्थायी उपलब्धियों की ओर ले जाते हैं।

ऋणात्मक आतंकवाद

ऋणात्मक आतंकवाद वह है, जिसमें किसी देश अथवा जाति का कोई असंतुष्ट गुट देश से अलग होने, अलग राज्य स्थापित करने की माँग मनवाने के लिए पूरे देश और समाज को आतंकित करता है। पंजाब का आतंकवाद इसी श्रेणी में आता है, जिसने देश के बाहर भी अपने पंजे फैलाए।

आतंकवाद की ऐसी विचारधारा का पोषण करता है जिसमें अपनी इच्छाओं को मनवाने के लिए अस्त्र–शस्त्रों के प्रयोग से निर्दोष लोगो में भय पैदा करना है। भौतिक दृष्टि से सम्पन्न समझे जाने वाले राष्ट्रों तथा कट्टर मानसिकता वाले राष्ट्रों में यह आतंकवाद की प्रवृत्ति खूब पनप रही है। आतंकवादी अपनी नीतियों को मनवाने के लिए आम जनता को अपना निशाना बनाते हैं ताकि सरकार पर दबाव बनाया जा सके।

वृहद हिन्दी कोष के अनुसार, 'राज्य या विरोधी वर्ग को दबाने के लिए भयोत्पादक उपायों का अबलम्बन ही आतंकवाद है।'

आतंकवादी अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अमानवीय कृत्यों का सहारा लेते हैं। उनके द्वारा जनता को भयाक्रान्त किया जाता है जिससे सभी व्यक्तियों में उनके प्रति डर पैदा हो। आतंकवाद का उद्देश्य है अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए युवाओं को दिशा भ्रमित कर उनका उपयोग देश या विश्व में आतंकवादी गतिविधियों का संचालन करने के लिए किया जाना। इसके द्वारा सार्वजनिक सम्पत्ति, देश की सुरक्षा व अखण्डता को नुकसान पहुँचाया जाता है।

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद के भयावह स्वरूप का सामना कर रहा है। यद्यपि आतंकवाद प्राचीनकाल से ही अपनी उपस्थिति दर्ज करता रहा है परन्तु वर्तमान में इसने भीषण रूप धारण कर लिया है तथा सम्पूर्ण विश्व में इसका दायरा निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है। यह आज किसी एक राष्ट्र की समस्या ही नहीं बल्कि यह सम्पूर्ण विश्व की समस्या बन चुकी है जिसे आपसी सहयोग से ही दूर किया जा सकता है।

आतंकवाद को व्यापक बनाने में विभिन्न परिस्थितियां जिम्मेदार हैं, जिसमें बेरोजगारी, झुंझलाहट व क्रोध, सामाजिक परिवेश, महत्त्वकांक्षा, धार्मिक कट्टरपंथ, आतंकवादी गतिविधियों को राष्ट्रों का प्रोत्साहन आदि हैं। बेरोजगार युवा अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं। कई बार व्यक्ति अपने क्रोध व झुंझलाहट पर नियन्त्रण नहीं कर पाते तथा गलत दिशा की ओर उन्मुख हो जाते हैं। महत्वकांक्षा भी आतंकवाद की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जो लोग महत्वकांक्षी होते हैं उनको आतंकवादी आसानी से पैसों का लालच देकर अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं और उनसे राष्ट्र विरोधी कार्य कराते हैं। कुछ राष्ट्र भी आतंकवादी गतिविधियों को प्रोत्साहित करते हैं इनमें शीर्षस्थ स्थान पाकिस्तान का माना जाता है। ऐसा नहीं है कि पाकिस्तान खुद आतंकवाद से बचा हुआ है बल्कि वह तो अन्य राष्ट्रों से भी अधिक परेशान है। वहाँ आई. एस. आई. जैसे संगठन मुँह उठाये खड़े हैं जिन्हें वहाँ की सरकार कुछ नहीं कहती । भारत में होटल ताज पर हमला हो या अन्य हमले, उनके पीछे पाकिस्तान के होने के सबूत मिले हैं। तालिबान को अमेरिकी साम्राज्यवाद ने ही पैदा किया है। अनेक कट्टरवादी और आतंकवादी संगठन सऊदी अरब के पैसो से तैयार हुए हैं। भ्रष्टाचार भी आतंकवाद को फैलाने में काफी हद तक जिम्मेदार है। इसके कारण आतंकवादी संगठन बहुत आराम से सुरक्षा एजेंसियों को धोखा दे देते हैं। भूमण्डलीकरण के दायरे के साथ ही आतंकवाद का दायरा भी बढ़ रहा है और आज यह सुरसा के मुँह की तरह विभिन्न रूपों में फैल रहा हैं जैसे–आतंकवाद, इस्लामिक आतंकवाद, साइबर आतंकवाद, नक्सलवादी आतंकवाद, आणविक आतंकवाद, आनुवांशिक आतंकवाद आदि।

जैव आतंकवाद में आतंकवादियों द्वारा सूक्ष्म जीवाणुओं के द्वारा मानव समुदाय को हानि पहुँचाने की बात सामने आती है। ये सूक्ष्म जीवाणु एक बार प्रवेश कर जाने पर आसानी से मानव, जानवर या फसल को नष्ट कर देते हैं। 11 सितम्बर को अमेरिका पर हुए हमले के बाद जिस जैव आतंकवाद को लोग सिर्फ कल्पना में लेते थे वह एंथ्रेक्स युक्त लिफाफे की शक्ल में सामने आया। यह हरकत अलकायदा संगठन या इराक जैसे अमेरिका विरोधी देश की हो सकती है।

आतंकवादियों द्वारा अणुबमों व परमाणु बमों का ज्ञान प्राप्त कर लिया गया है जो सम्पूर्ण विश्व के लिए चिन्ता का विषय है। निरन्तर इस बात की चिन्ता बनी रहती है कि कहीं आतंकवादी आर्थिक या रेडियोएक्टिव बम का इस्तेमाल किसी देश के खिलाफ न कर दें या फिर किसी अपहृत विमान से हवा में इसे ना फैला दें। 1995 में चेचन्या अलगाववादियों ने मास्को के एक पार्क में खतरनाक परमाणु तथा रेडियोधर्मी तत्वों से भरे कनस्तर को रखकर आतंक मचा दिया।

साइबर आतंकबाद किसी सामाजिक, धार्मिक, सैद्धांतिक, राजनीतिक या अन्य उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कम्प्यूटर या कम्प्यूटर तन्त्र को बाधित करना या ऐसा करने की जानबूझकर कोशिश करना है। साइबर आतंकवाद शब्द का इस्तेमाल सर्वप्रथम 'जेरेड वेस्ट्रम' ने किया था। 1999 में कोसोवा युद्ध के दौरान पूरे 78 दिनों तक अमेरिका ने सर्बियन कम्प्यूटर नेटवर्क को पूरी तरह जाम कर दिया था। अफगानिस्तान संकट के समय पाकिस्तान, अरब और फिलीस्तीन के कम्प्यूटर हैकर्स ने अलकायदा संगठन नेटवर्क विकसित किया ताकि वे अमेरिका सेना की वेबसाइट सहित परमाणु ऊर्जा नियन्त्रण बोर्ड, एम्स तथा जे.एन.यू. की जानकारियां प्राप्त कर सकें। एक अन्य आतंकवाद है जिसे आतंकवादियों का घातक हथियार कहा जा सकता है,वह है आनुवांशिक आतंकवाद। ऐसा माना जाता है कि जैव आतंकवादी उपलब्ध जीन और वायरस के तालमेल से एंथ्रेक्स से भी ज्यादा खतरनाक जीवाणु तैयार कर सकते हैं।

विश्व के विभिन्न देशों में आज आतंकवादियों द्वारा विभिन्न नामों से संगठनों का संचालन किया जा रहा है जिनमें लिट्टे (लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम),

जैश–ए–मौहम्मद, लश्कर–ए–तैयबा, सिम्मी, अलकायदा, तालिबान, आई.एस.आई. आदि हैं। लिट्टे (LTTE) श्रीलंका में पाया जाने वाला आतंकवादी संगठन है। जो 1976 ई0 में अस्तित्व में आया। यह सिंहली व तमिलों के बीच संघर्ष को बनाए रखता है।जैश –ए–मौहम्मद भी एक आतंकवादी संगठन है जिसका ध्येय भारत से कश्मीर को अलग करना है। हांलाकि यह अमेरिका और पश्चिमी देशों के विरूद्ध आतंकवादियों गतिविधियों में भी शामिल समझा जाता है। इसकी स्थापना मसूद अजहर नामक पाकिस्तानी पंजाबी नेता ने मार्च 2000 में की थी। यह भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन द्वारा जारी आतंकवादी संगठनों की सूची में शामिल है।

लश्कर–ए–तैयबा दक्षिण एशिया के सबसे बड़े इस्लामी आतंकवादी संगठनों में से एक है। इसकी स्थापना हाफिज मुहम्म्द सईद ने की। लश्कर–ए–तैयबा ने जैश –ए–मौहम्मद के साथ मिलकर दिसम्बर 2001 में भारतीय संसद पर हमला किया। इसमें लगभग 14 लोग मारे गए। 2000 ई0 में भारत के ऐतिहासिक किले पर हुए हमले की जिम्मेदारी भी इसने ही ली। यह दुनिया की विभिन्न देशों में अलग–अलग तरीके से आतंकी गतिविधियों में लिप्त रहता है।

आज इस्लामिक स्टेट जो आई.एस.आई.एस. के नाम से भी जाना जाता है, आतंक की दुनिया का शैतान बन गया है। इसने बहुत ही कम समय में सारी दुनिया में अपना आतंक फैलाया है। इसने उत्तरी ईराक और पश्चिमी सीरिया पर कब्जा करके वहाँ अपनी सरकार बना ली है। यह आतंकी संगठन इतना बर्बर है कि आये दिन किसी न किसी के सर कलम करने की वीडियो जारी करता है।

एक अन्य आतंकी संगठन है अलकायदा जिसे दुनिया भर के आतंकी संगठनों में सबसे बड़ा ब्रांड माना जाता है। इसकी स्थापना सन् 1989 ई0 में ओसामा–बिन–लादेन ने की थी। लादेन के ही नेतृत्व में अलकायदा ने अमेरिका पर 9/11 का हमला किया था। जिसमें अमेरिका स्थित 'वर्ल्ड ट्रेड सेंटर' को निशाना बनाया गया। इसमें बहुत लोगों की मृत्यु हुई। इस घटना ने अफगान युद्ध को जन्म दिया। जो 2012 में ओसामा–बिन–लादेन की मृत्यु के साथ खत्म हुआ। इसी तरह से तालिबान, बोको हरम, अलनुस्त्रा फ्रंट, हिजबुल्लाह, हमास आदि ऐसे आतंकी संगठन है जिन्होंने समय–समय पर विश्व के अलग–अलग देशों में आतंकी हमले कर व्यक्तियों के मन में अपना डर बैठाया है।

अब तक की आतंकवादी गतिविधियों पर नजर दौड़ाएं तो यह बोध होता है कि आतंकवाद दिन–प्रतिदिन विश्व में अपना दायरा बढ़ाता जा रहा है। प्राचीनकाल में आतंकवाद स्वरूप इतना विकराल नहीं था और न ही उसके द्वारा इतनी आतंकी गतिविधियों ही की जाती थी परन्तु वर्तमान समय में न जाने कितने आतंकी संगठन अस्तित्व में आये है।

आतंकवाद के कारण सम्बन्धित राष्ट्र को औद्योगिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों से सम्बन्धित समस्याओं का सामना पड़ता है। आतंकवादियों द्वारा सैनिक बटालियनों पर हमले किये जाते हैं ताकि देश की सुरक्षा व्यवस्था अस्त–व्यस्त हो जाये और वे राष्ट्र में आसानी से आतंकी गतिविधियों का संचालन कर सके। आतंकवाद देश की औद्योगिक क्षमता को भी प्रभावित करता है। कोई भी उद्योगपति उस देश में अपना उद्योग स्थापित करना नहीं चाहेगा जहाँ आतंकवादी गतिविधियां सक्रिय है। उसे डर रहता है कि कहीं उसके द्वारा स्थापित उद्योग को आतंकवादियों द्वारा क्षति न पहुँचा दी जाये। इसी प्रकार कोई विदेशी निवेशक भी उस देश में पूँजी लगाने का खतरा मोल नहीं लेगा जहाँ आतंकवाद का बोलबाला है। इससे देश की आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है।

जब हम बात करते हैं तो बंगाल के नक्सलवादियों ने अनेक प्रकार के हिंसात्मक कार्य किए और महत्वपूर्ण व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया। भारत के भूतपूर्व न्यायधीश श्री ए.एन.राय. 10 मार्च सन् 1975 को बाल–बाल बचे। तत्कालीन रेलवे मंत्री श्री ललितनारायण मिश्र की भाषण देते समय हत्या कर दी गई। पं0 दीनदयाल उपाध्याय को रेलयात्रा के बीच मार दिया गया।

पंजाब में पाकिस्तान से प्रशिक्षण लेकर आए आतंकवादियों ने सुव्यवस्थित रूप से अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। ये धार्मिक स्थलों को अपने अड्डे के रूप में प्रयोग करते रहें। आतंकवादियों ने अपनी एक पूरी सेना तैयार कर ली। इन्हीं आतंकवादियों ने श्रीमती इंदिरा गांधी और श्री लोंगोवाल की हत्या की। इंडियन एयरलाइंस का एक जहाज गिरा दिया गया, जिसमें सभी 329 यात्री जीवन से हाथ धो बैठे। भूतपूर्व सेनाध्यक्ष श्रीधर वैद्य की 10 अगस्त 1986 को पूना में हत्या कर दी गई।

राजनीतिक हत्याओं के क्रम में विभिन्न राजनीतिक दलों और कार्यकर्ताओं की हत्या तो एक सिलसिला बन चुका है। पंजाब केसरी के संपादक लाला जगतनारायण एवं श्री रमेशचंद्र की हत्या भी आतंकवादियों के स्वार्थी क्रोध का ही परिणाम है।

पंजाब गत अनेक वर्षों से आतंकवाद की ज्वाला में धधकता रहा। बैंको को लूटा जाता रहा, घरों में आग लगाई जाती रही, निर्दोष लोगों की हत्याएँ की गई, कितने की व्यक्ति अपने घर, खेत, कारखाने छोड़कर भाग खड़े हुए।

आतंकवाद की ज्वाला से पंजाब तो जल ही रहा था, आतंकवादियों ने इस जहर को अन्य प्रांतों में भी फैलाना शुरू कर दिया। राजधानी में भी उन्होंने अपनी स्थिति जताई और दिल्ली के ग्रेटर कैलाश में आयोजित जन्मदिवस समारोह में 14 बेकसूर लोगों की हत्या कर दी। अनेक स्थलों पर बम विस्फोट हुए। खिलौने, ट्रांजिस्टरों, ब्रीफकेसों तथा टार्च आदि के रूप में आतंकवादी विस्फोटक पदार्थ अनेक स्थानों पर छोड़ गए। पंजाब और दिल्ली के अतिरिक्त यह आग उत्तर प्रदेश के तराई वाले क्षेत्र में फैल गई। परिणामस्वरूप कितने ही अनजान लोगों की जानें चली गईं। यह घृणित सिलसिला अब भी जारी है। इस बीच पाकिस्तान में प्रशिक्षित और पथभ्रष्ट कश्मीरी नवयुवकों ने कश्मीर की सुकोमल घाटी को अपने आतंकवादी गतिविधियों का केन्द्र बनाया हुआ है। 1990 के प्रारम्भ में इन आतंकवादियों ने कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री मुशीर–उल–हक और एच.

एम.टी. के जनरल मैनेजर श्री एम.एल. खेड़ा का अपहरण करके उन्हें मौत के घाट उतार दिया। भारत विरोधी कतिपय देश इन आतंकवादी गतिविधियों में अनेक प्रकार की सहायता कर रहे हैं– धन से, हथियारों से तथा आतंकवादियों को प्रशिक्षित करके निश्चय ही उनका उद्देश्य भारत को तोड़ना और उसकी उन्नति तथा प्रगति में बाधा उपस्थित करना है।

21 मई को तमिलनाडु ने श्री पेरूबंदर में श्री राजीव गांधी की हत्या से सिद्ध हो गया है कि आतंकवादी गतिविधियाँ पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक संपूर्ण भारतवर्ष में फैल चुकी है।

भारत में बढ़ता सामप्रदायिक 'आतंकवाद'

भारत में पिछले कुछ समय पर नज़र डालें तो अनेक ऐसी घटनाएं हुई हैं जो भारत की कानून – व्यवस्था के साथ–साथ राजनीतिक नेतृत्व और सरकार के लिए भी चुनौती है।

आतंकवाद एक खतरनाकर प्रवृति है जिसे रोकना होगा। मुझे सबसे बड़ा अफसोस यही है कि जिनके हाथ में क़ानून को लागू करने की जिम्मेदारी है, वे ऐसी कोई घटना होने क्यों देते है और अगर कोई घटना हो जाती है तो जो गुनहगार हैं उन्हें पकड़कर सख्ती से सजा क्यों नहीं दिलवाते।

पर्यवेक्षकों का कहना है कि सांप्रदायिकता ने अब 'आतंकवाद' का रूप धारण कर लिया है। अनेक राज्यों की पुलिस ने हाल के समय में हुए बम धमाकों के सिलसिले में कुछ लोगों को गिरफतार किया है। यानी जो लोग आतंकवादी घटनाओं को इस्लामी जेहाद और अंतराष्ट्रीय आतंकवाद से जोड़कर देखते थे। उन्हें विश्लेषण का एक और मुद्दा मिल गया है।

"एक धारणा सी बन गयी है कि लोग आतंकवाद को सिर्फ इस्लामी जेहाद से जोड़कर देखने लगे हैं, जब उनसे कहा जाता है कि नक्सली या माओवादी विद्रोहियों की गतिविधियों को क्या कहेंगे, या पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में जो हो रहा है, देश से बाहर श्रीलंका में तमिल टाइगर यानी एलटीटीटी जो कर रहा है वो भी तो एक तरह से आतंकवाद ही है, तो लोगों को उनका ध्यान नहीं आता है।"

बढ़ता चरमपंथ

जावेद आनंद विभिन्न गुप्तचरों की सूचनाओं के आधार पर अपनी जानकारी रखते हैं "किसी आतंकवादी गतिविधि में मुसलमान शामिल रहा है या नहीं, इसका फैसला तो अदालत ही कर सकती है क्योंकि यह तो जाँच पड़ताल और न्याय व्यवस्था का काम है । मगर पिछले 15–20 वर्षों में जो सांप्रदायिक ध्रुवीकरण हुआ है उसकी वजह से इतना जरूर वास्तविक नज़र आता है कि मुसलमानों का एक छोटा सा तबका चरमपंथी गतिविधियों की तरफ झुकाव रखने लगा है।

चुनौती बड़ी है

राजनीतिक विश्लेषक और पत्रकार कुलदीप नैयर कहते हैं कि असल समस्या यह है कि हिंदू और मुसलमानों मे कुछ लोग चरमपंथी रूख अपना रहें हैं जिससे समाज के बंटने का ख़तरा पैदा हो जाता है।

समाज को अस्थिर होने से रोकने की प्रमुख जिम्मेदारी तो राजनीतिक नेतृत्व, बुद्धिजीवी वर्ग और सरकार की है लेकिन आम नागरिक भी अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकते।

जड़ कहाँ है ?

जस्टित जेएस वर्मा कहते हैं, 'यह मैं बहुत समय से कहता आया हूँ कि देखिए, समस्या की जड़ में जाने की कोशिश कीजिए। अभी आप क्या कर रहे हैं कि आप किसी को भी आतंकवादी कहकर सिर्फ गोली मार देना चाहते है। आतंकवाद है क्यों इसकी वजह तो जानने की कोशिश कीजिए। राजनीतिक, आर्थिक या सामाजिक कारण है पहले उनका पता तो लगाइए। आप उन कारणों को जब तक दूर नहीं करेंगें। समस्या का हल नहीं होगा। यह तो वैसे ही है कि अगर किसी आदमी को बुखार आ रहा है तो आप बुखार का इलाज तो करने लगे हैं लेकिन बुखार किन कारणों से आ रहा है उसका पता लगाने की कोई इच्छा नज़र नहीं आती, तो बुखारा आज खत्म हो जाएगा तो कल फिर आ जाएगा।

जस्टिस वर्मा कहते हैं, 'अगर किसी एक आतंकवादी को मारते हैं तो उसके बाद अनेक पैदा हो जाते हैं और उस धोखे में आप बेकसूर लोगों को भी मार देते हैं।

पंजाब में चरमपंथी गतिविधियों के दौरान ऐसा ही हुआ जिनका अब पता चल रहा है जब हजारों निर्दोष लोगों को मार दिया गया था।

सिस्टम कितना कारगर?

कुलदीप नैयर कहते हैं, उड़ीसा में हाल के दिनों हिंदुओं और ईसाइयों के बीच हिंसा के दौरान ऐसे आरोप लगाए गए कि पुलिस खड़ी होकर तमाशा देखती रही। वर्ष 2002 में गुजरात में पुलिस की बड़ी नाकामी साबित हुई तो ऐसा लगता है कि पुलिस में भी कुछ तत्व दूषित हो गये हैं।

के0 एस0 ढिल्लो कहते है, 'सिस्टम बहुत बोसीदा हो गया है जिसे कारगर बनाने की बेहद ज़रूरत है। पुलिस विभाग में सिर्फ पैसा बहाने से कुछ नहीं होगा, बल्कि इसकी पूरी संस्कृति और सोच को बदलना होगा। एक तरह से पूरा सिस्टम बदलना होगा।'

इसमें कोई शक नहीं कि सभी नागरिकों को बिना डर कि जीवन जीने का अधिकार है और देश में होने वाली विध्वंसक घटनाओं से शांतिप्रिय लोगों की यह जरूरत पूरी नहीं होती है। एक तरफ तो शिक्षा बढ़ रही है और देश दुनिया हर क्षेत्र में प्रगति कर रही है, मगर दूसरी तरफ ऐसा भी नजारा आता है जैसे कि समाज में मानसिकता भी संकुचित हो रही है।

सिकुड़ती जगह?

कुलदीप नैयर कहते हैं, एक वजह तो यही नज़र आती है कि कुछ लोगों का भरोसा उठ रहा है कि उनका पहले जो समाज में स्थान था वो कम होता जा रहा है। उन्हें शायद लग रहा है कि पहले उनकी अपनी जगह थी जिसे अब छीना जा रहा है। ऐसे मे व्यक्ति हताश भी हो सकता है। भारत में असल सेंटर में व्यक्ति का जो स्थान होता था, जिसे हम बीच की जगह कहते हैं, हाल के दिनों में ऐसा लग रहा है कि यह स्थान कुछ सिकुड़ता

जा रहा है। राजनीतिक दलों में हमला कर–करके उस स्थान को और कम कर दिया हैं दरअसल इस बीच की जगह को बड़ा करने की बेहद जरूरत है।

बँटवारा हुए तो साठ साल से ज्यादा गुजर चुके हैं और नई सदी भी अपना सफर शुरू कर चुकी है, पर्यवेक्षकों का कहना है कि अब आतंकवाद का रूप ले चुकी साप्रदायिकता के दानव से छुटकारा पाने के लिए शुतुरमुर्ग की तरह रेत में मुँह छुपाने से कुछ हासिल नहीं होगा बल्कि राजनीतिक ईमानदारी नज़र आनी चाहिए।

जस्टिस एस0 वर्मा कहते हैं, 'मैं यह कहता हूँ कि किसी भी इंसान को अन्याय से पीड़ित होने की भावना से ग्रसित नहीं होने देना चाहिए, यही कानून के शासन की सही भावना है। ये कौन कहता है कि किसी भी समुदाय के सभी लोग एक जैसे होते हैं। सारे इंसान अलग–अलग हैं, हर एक की फ़ितरत अलग–अलग है। लेकिन आज की राजनीति यही सोचती है कि किससे क्या फायदा हो सकता है, बस हर आदमी अपनी अपनी रोटी सेंकना चाहता है। हर राजनीतिक दल वोट की राजनीति खेल रहा है। इसलिए अगर समाज का कोई भी तबका ये महसूस करे कि उसके साथ अन्याय हो रहा है तो यह सरकार और व्यवस्था की एक बहुत बड़ी नाकामी है और यह बिल्कुल भी नहीं होने देना चाहिए क्योंकि ऐसी स्थिति में ध्रुवीकरण और बढ़ता है।'

कुलदीप नैयर कहते हैं, कि समस्या गंभीर तो है लेकिन सबसे अहम बात ये है कि आम नागरिकों को अपनी ज़िम्मेदारी समझनी होगी। अब सिर्फ राजनीतिक नेतृत्व और सरकार के भरोसे हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठा जा सकता क्योंकि लोकतंत्र की सबसे बड़ी खासियत यही है कि अततः आम नागरिक की राय ही वजन रखती है।

आतंकवाद का समाधान

आतंकवाद का स्वरूप या उद्देश्य कोई भी हो, उसका भौगोलिक क्षेत्र कितना ही सीमित या विस्तृत क्यों न हो, इसने जीवन को अनिश्चित और असुरक्षित बना दिया है। आतंकवाद मानव जाति के लिए कलंक है, इसलिए इसको शक्ति के साथ दबा दिया जाना चाहिए।

भारत सरकार ने आतंकवादी गतिविधियों को बड़ी गंभीरता से लिया है और इनको मिटाने के लिए दृढ़ कदम उठाये हैं। भारत की संसद ने आतंकवाद विरोधी विधेयक पारित कर दिया है,जिसमें आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त रहने वाले व्यक्तियों को कठोर से कठोर दंड देने का प्रावधान किया गया है।

हमारे राष्ट्रनेताओं का मत है कि हिंसा और आतंकवाद के द्वारा किसी समस्या का हल नहीं किया जा सकता। यदि कोई समस्या है भी तो उसे पारस्परिक विचार–विमर्श से हल करना चाहिए। इसके लिए निर्दोष लोगों की हत्या करने का कोई औचित्य नहीं है।

आतंकवाद की समस्या का समाधान मानसिक और सैनिक, दोनो स्तरों पर किया जाना चाहिए। जिन लोगों को पीड़ा हुई, किसी भी कारण, जिनके परिवार अथवा सम्पत्ति को नुकसान हुआ है, संबंधियों और रिश्तेदारों की मृत्यु हुई है, उन्हें भरपूर मानसिक समर्थन दिया जाना चाहिए, ताकि घाव हरे न रहें और वे मानसिक पीड़ा के बोझ को सह ना सकने के कारण आतंकी ना बन जाएं।

कई बार शासन को कठोर कदम भी उठाने पड़ते हैं। आवश्यकता होने पर इस प्रकार के कदम उठाने से डरना उचित नहीं होता। इसके लिए गुप्तचर एंजेसियों को सशक्त करने की आवश्यकता है, ताकि आतंकवादी गतिविधियों के आरंभ होने से पहले ही उन्हें कुचल दिया जाए। कानून और व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए।

आतंकवादियों को पकड़ने तथा उनको दंडित करने के आधुनिक साधनों तथा तकनीकों का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसके लिए जनता को शिक्षित करने की भी आवश्यकता है, ताकि आतंकवाद से लड़ने में भय का अनुभव ना करें।

आतंकवाद से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर भी प्रयास किया जाना चाहिए। अनेक देशों के राजनेताओं ने आतंकवाद की भर्त्सना की है । आवश्यकता इस बात की है कि सभी देश एक मत से आतंकवाद को समाप्त करने का दृढ़ निश्चय करें । विश्व की सभी सरकारों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद के विरूद्ध पारस्परिक सहयोग करना चाहिए ताकि कोई भी आतंकवादी गुट किसी दूसरे देश में शरण या प्रशिक्षण न पा सके।

आज विश्व के अधिकांश देश आतंकवाद को समाप्त करने के लिए सजग हो उठे हैं, किंतु दुर्भाग्य से अब भी ऐसे कई देश हैं, जो आतंकवादियों की मुक्तस्थली बने हुए हैं। निश्चय ही इस प्रकार के देशों की निंदा की जानी चाहिए।

आतंकवाद के विरूद्ध त्वरित तथा प्रभावी कार्यवाही की आवश्यकता है, ताकि जनसाधारण में व्याप्त भय और अनिश्चितता की भावना को समाप्त किया जा सके और उन्हें सुरक्षा प्रदान की जा सके।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में आतंकवाद के कारण विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो गई है। जिसके कारण प्रशासनिक ढाँचा चरमरा उठा है। अतः आतंकवाद की समस्या का हल किया जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रशासन को सदभावना एवं सहिष्णुता की भावना को अपनाना होगा, क्षेत्रीय असमानता को दूर करना होगा, बेरोजगारी को दूर करना होगा। यदि यह समस्या शांतिपूर्ण तरीकों से हल न हो तो कठोरता से भी कदम उठाने होगें। आतंकवाद ने समाज की शांति को भंग किया है। आज विश्व में सौहार्द, प्रेम, भाईचारा, सहानुभूति व सुख धीरे–धीरे विलुप्त होते जा रहें हैं। जिस कारण राष्ट्रों की समृद्धि व विकास असंभव सा प्रतीत होता है। आतंकवाद से देश के पर्यटन व्यवसाय को भी बहुत क्षति पहुँची है। पर्यटक उन देशों मे जाना पसंद नहीं करते जहाँ आतंकवादी सक्रिय हों। उदाहरण के लिए भारत के कश्मीर प्रदेश को ले सकते हैं जहाँ पर्यटकों ने जाना कम कर दिया है क्योंकि वहाँ आतंकवादी हमले होते रहें हैं। 26 नवम्वर को मुंबई के ताज होटल पर हमला किया गया जिसमें 10 आतंकी शामिल थे। इस हमलें में 166 लोगों की मौत हो गयी जिसमें कुछ विदेशी पर्यटक भी शामिल थे। आतंकवाद के दुष्प्रभाव से देश कमजोर होता जा रहा

है क्योंकि उसकी अधिकतर शक्ति आतंकवाद से लड़ने में ही खर्च हो जाती है।

आज आतंकी घटनाओं को रोकना नितान्त आवश्यक हो गया है और इसके लिए विश्व के राष्ट्रों को अलग–अलग नहीं बल्कि एक साथ मिलकर प्रयास करने चाहिए। राष्ट्रों की सबसे बड़ी कमी यह है कि वह आतंकवादी घटना हो जाने के बाद सक्रिय होते हैं जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। विश्व को आतंकवादियों के खिलाफ हमेशा मोर्चा संभाले रहना चाहिए। भारत में मुंबई पर आतंकवादी हमले के बाद राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (एन. आई.ए.) का गठन किया गया जो घटना के बाद आतंकवादियों को पकड़ने और उन्हें सजा दिलाने का काम करती है। यदि हम इसके स्थान पर आतंकवाद रोधी एजेन्सी बनाते तो ज्यादा बेहतर होता। इसकी सहायता से हम आतंकवादियों को आतंकी घटनाओं को अंजाम देने से पहले ही पकड़ सकते थे।

इसी तरह आतंकवाद विरोधी तन्त्र को भी कारगर तरीके से मजबूत करने की आम आदमी की सुरक्षा पर भी ध्यान देना चाहिए। संयुक्त राष्ट्रों पर प्रतिबन्ध लगाने चाहिए जो आतंकवादी गतिविधियों का संचालन करने के लिए आतंकवादियों को अस्त्र–शस्त्र उपलब्ध कराते हैं।

ऐसे राष्ट्रों को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि आतंकवादियों का कोई विशेष देश नहीं होता और अगर जरूरत पड़ती है तो वे उस देश को भी निशाना बनाने से नहीं चूकते। जो उनको हथियार उपलब्ध कराते हैं।

आतंकवाद चाहे छोटे स्तर पर हो या बड़े स्तर पर इनको केवल शक्ति बल के द्वारा ही नहीं दबाया जा सकता बल्कि इनसे मुकाबले के लिए सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक जैसे सभी विकल्पों को एक साथ लेकर चलना ही सबसे अच्छा विकल्प है। आतंकवाद प्रतिरोध का एक तरीका यह भी है कि हमें केवल आतंकवादियों से ही नहीं लड़ना वरन् उन्हें प्रेरित करने वाले विचारों से भी लड़ना है यदि इन विचारों को हम जड़ से समाप्त करने में सफल रहते हैं तो आतंकवाद का जन्त ही नहीं होगा।

अतः हम कह सकते हैं कि वर्तमान में विभिन्न देशों के अथक प्रयासों के बावजूद आतंकवाद कम होने की बजाय दिन–प्रतिदिन और विकराल रूप लेता जा रहा है और यह विश्व के लगभग सभी देशों के लिए समस्या बना हुआ है। लेकिन तसल्ली यह है कि लोग चुप नहीं बैठे हैं और उनमें कुछ हलचल जरूर देखने को मिल रही है। हाँ, इतना जरूर है कि इस हलचल ने अभी ठोस आकार नहीं लिया है। मगर इसमें कोई शक नहीं है कि भारत देश की आत्मा धर्मनिरपेक्ष है जो अब मजबूत है, अलबत्ता चंद लोग हैं जो इसे बिगाड़ने की कोशिश कर रहें हैं। अब समय आ गया है कि विश्व के सभी राष्ट्र इससे मुक्ति के लिए कोई ठोस उपाय सोचें तथा एकजुट होकर पूरी रणनीति के साथ इसके विरूद्ध जंग छेड़ें क्योंकि यह एक ऐसी जानलेवा बीमारी है कि यदि इसका उपचार समय रहते न किया गया तो यह हमें काल के गाल में पहुँचाने में ज्यादा समय नहीं लगायेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डा0 पंत पुष्पेश, जैन पाल और डा0 पंचाली राखी : अर्न्तराष्ट्रीय संबंध, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2014–15.
2. युसुफजई मलाला और लेम्ब क्रिस्टिना : आई0 एम0 मलाला, लिटिल ब्राउन एंड कम्पनी प्रकाशन, 2013.
3. देवा मुकुल : लश्कर, हार्पर कालिस प्रकाशन, 2013.
4. यादव राजीव और आलम शाहनवाज : ऑपरेशन अक्षरधाम, फरोस मीडिया एंड पब्लिशिंग प्रा0 लि0, 2015.
5. कुमार अरूण, "लिट्टे के गढ़ों पर श्रीलंका सेना का कब्जा", प्रतियोगिता दर्पण, मई 2009, नई दिल्ली।
6. डा0 ललित गुलाबचन्द्र और डा0 सिंह अभय कुमार, "नक्सलवाद समस्याओं से घिरी आन्तरिक सुरक्षा", प्रतियोगिता दर्पण, जून 2010, नई दिल्ली।
7. नसरीन तसलीमा, "आतंकवाद पर खलती है यह चुप्पी" अमर उजाला, 2 अक्टूबर 2014, मेरठ।